शान्तिकी कूटनीति

दीपावली महापर्वके ठीक एक दिन बाद सोमवारको रूस-यूक्रेन युद्धके सन्दर्भमें शान्तिके प्रयासोंकी दिशामें भारतने बहुत बड़ी पहल की है और इसके निहितार्थको वैश्विक परिप्रेक्ष्यमें देखनेकी आवश्यकता है। यह शान्ति कूटनीतिका महत्वपूर्ण दृष्टान्त है। सोमवारको जहां प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीने यूक्रेनके राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्कीसे फोनपर लम्बी वार्ता की वहीं उसी समय परराष्ट्रमंत्री एस. जयशंकरने भी रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोवसे बेहद खास वार्ता कर शान्तिके प्रयासोंकी दिशामें बड़ा कूटनीतिक सन्देश दिया है। रूस-यूक्रेनके बीच लगभग चार वर्षोंसे जारी युद्धको समाप्त करनेकी यह प्रशंसनीय कोशिश है। इन वार्ताओंसे यह प्रश्न उठने लगा है कि क्या भारत इसमें मजबूत भूमिका निभा सकता है? प्रधान मंत्री मोदीने जेलेंस्कीसे स्पष्टत: कहा है कि भारत संघर्षका शान्तिपूर्ण समाधान निकालनेके लिए हर प्रयासमें योगदान करनेको तैयार है। यह भारतकी उस विदेश नीतिका हिस्सा है जिसमें राष्ट्रीय हित, रणनीतिक स्वायत्तता और शान्ति कूटनीतिको एक साथ साधनेका प्रयास किया जाता है। भारतकी यह कूटनीतिक सक्रियता अचानक नहीं बढ़ी है। इसके पूर्व प्रधान मंत्री मोदी रूसके राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिनके साथ भी यूक्रेन युद्धको लेकर चर्चा कर चुके हैं। परराष्ट्रमंत्री जयशंकरने विगत ३१ अक्तूबरको ही संकेत कर दिया था कि भारत रूस, यूक्रेन, यूरोपीय देशों और अमेरिकाके सम्पर्कमें है। मोदीने दिल्लीमें पुतिन और इसके पहले बिश्केकमें भी इस मुद्देपर वार्ता की थी। जयशंकर स्वयं मास्को और कीवका दौरा कर चुके हैं। मोदीने भारतके मानवीय दृष्टिकोणको दोहराते हुए कहा है कि युद्धका समाधान बातचीत और कूटनीतिसे ही होना चाहिए। नौ नवम्बरको भारतने जो शान्ति वार्ताकी है वह समय भी काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि १० और ११ नवम्बरको अबूधाबीमें अमेरिका, रूस और यूक्रेनके प्रतिनिधियोंके बीच वार्ता प्रस्तावित है। इसका उद्देश्य युद्ध समाप्त करनेकी दिशामें कूटनीतिक रास्ता तलाशना है। भारतकी विदेश नीतिका एक महत्वपूर्ण आधार रणनीतिक स्वायत्तता है। रूस और यूक्रेनके मामलेमें यह नीति स्पष्टत: दिखायी देती है। रूस भारतका पुराना कूटनीतिक साझेदार है वहीं दूसरी ओर यूक्रेनके साथ भी भारतके विभिन्न क्षेत्रोंमें सम्बन्ध हैं। भारतने पश्चिमी देशोंके दबावके बाद भी रूसके साथ अपने सम्बन्ध यथावत बनाये रखा है। ताजा वार्ताओंका यह संकेत है कि भारत किसी एक पक्षके साथ खड़े होनेकी बजाय दोनों पक्षोंके बीच संवादके रास्ते खुले रखनेका पक्षधर है। शान्ति कूटनीतिमें कुछ बाधाएं और चुनौतियां भी हैं। यदि इसे खुले विचारसे सुलझानेका प्रयास किया जाय तो बड़े सार्थक परिणाम सामने आ सकते हैं, जो विश्वके हितमें है।

अनुकरणीय कानून

दिल्ली सरकारने लापरवाह अधिकारियोंकी नकेल कसते हुए जो नया कानून अधिसूचित किया है, वह उचित और आजके सन्दर्भमें अति आवश्यक है। राष्ट्रीय राजधानीमें 'दिल्ली सेवा वितरण अधिकार अधिनियम, २०२६' अधिसूचित कर दिया गया है, जो सरकारी सेवाओंको समयपर पारदर्शी और जवाबदेही बनानेकी दिशामें बड़ा कदम है। यह अधिनियम २०११ के पुराने समयबद्ध सेवा वितरण कानूनकी जगह लेगा और एक आधुनिक जवाबदेह व्यवस्था लागू करनेमें मदद करेगा। इसके तहत अब समयपर काम नहीं होनेपर अधिकारियोंपर जुर्माना लगेगा। निर्धारित समयमें काम नहीं होने या अनुचित कारणसे आवेदन निरस्त करनेपर जिम्मेदार अधिकारीपर २५० रुपये प्रतिदिनके हिसाबसे अधिकतम ५००० रुपयेतक जुर्माना लगेगा। इस कानूनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अब नागरिक अपने आवेदनकी स्थिति आनलाइन ट्रैक कर सकेंगे और उन्हें अनावश्यक कार्यालयोंके चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। इस नये कानूनका उद्देश्य सरकारी विभागोंमें सेवाओंको निर्धारित समय-सीमामें बांधना और अनावश्यक देरीके लिए अधिकारियोंकी जवाबदेही तय करना है। खास बात यह है कि अब विभागोंको सभी आवेदनका डिजिटल रिकार्ड रखना होगा और उनकी स्थिति नियमित रूपसे अपडेट करनी होगी। इस अधिनियमका एक महत्वपूर्ण प्रावधान स्वत: अपील (आटोमेटिक एस्क्लेशन) की व्यवस्था है जो नागरिक शिकायत निवारण प्राधिकरणके समक्ष अपील माना जायगा। सूचनाका अधिकार कानून (आरटीआई) के बाद यह दूसरा ऐसा कानून है जिसके माध्यमसे लापरवाह अधिकारियोंको कर्तव्यबोध कराया गया है। यह कानून सभी राज्योंके लिए अनुकरणीय है। इसे पूरे देशमें लागू किया जाना चाहिए।

लोक संवाद

पंचतंत्रकी शिक्षाएं

महोदय,- लुटियंस दिल्लीमें हुए हालिया घटनाक्रमको याद करते हुए, शिक्षा-शास्त्रके प्राचीन ग्रंथ, पंचतंत्रकी ओर ध्यान जाता है। यह हमें इन दिनों दुर्लभ सुकून और समझ प्रदान करता है। पंचतंत्रमें पांच चक्र हैं, जो एक रहस्यमयी परतोंमें गुंथे हैं। इसकी लोकप्रियता कई पाठकोंको इसे जानवरोंकी काल्पनिक कथाओंका संग्रह समझनेपर मजबूर करती है, जिसमें जीवन जीनेके ढंग सिखाने वाले मूल्य हैं। यह बात कुछ कहानियोंके लिए सच हो सकती है, सबके लिए नहीं। इसीलिए कुछ चुनिन्दा कहानियां बच्चोंके लिए बनी मानी जाती हैं। पंचतंत्रकी ज्यादातर कहानियोंमें एक गहरा राजनीतिक और प्रशासनिक संदेश है जिसकी व्याख्या करना एक चुनौती है। इनका ताना-बाना भी कम महत्वपूर्ण नहीं। इसमें प्रतीकात्मक अर्थोंकी अनेक परतें हैं और यही चीज कहानियोंमें है। वे हमें उन अलग-अलग पहलुओंको समझनेमें मदद करती हैं जिनसे आम लोग राज्य-व्यवस्थासे जुड़े महसूस करें। नागरिक अथवा मानवाधिकारोंका विचार आनेसे कहीं पहले लिखे गये 'पंचतंत्र' की बनावट, कहानियां और पात्र हमारी वर्तमान मुश्किलोंसे बहुत मिलते-जुलते हैं। पंचतंत्र हमें उन अनेक तरीकोंकी याद दिलाता है जिनके माध्यमसे समाजके आम लोग उस नीतिका पालन करते हैं, जिसपर राज्य-व्यवस्थाको आधारित माना जाता है। नीतिशास्त्रकी पुस्तकके रूपमें पंचतंत्रके पास आज हमें देनेके लिए उससे कहीं ज्यादा है जितना हम जानते हैं। हालांकि इसकी हर कहानी उस समस्याको हल करके खत्म होती है जिसको आधार बनाकर उसकी शुरुआत होती है, लेकिन कहानीके आखिरमें हमेशा बहसका परिदृश्य बनता है, जो कथानकके परिणामको रेखांकित करती है। दुनियाके मामलोंपर विचार करनेमें, भाग-२ की कहानीके पात्र विशेषको पढ़कर बहुत खुशी मिलती है, जो एकदम अलग परिवेश वाले चार जीवों- एक कौआ, एक हिरण, एक चूहा और एक कछुआकी दोस्तीसे जुड़ी है। हर दोपहर, वे एक प्राचीन पेड़के नीचे इकट्ठा होते हैं और अपनी दुनिया यानी जंगलका जायजा लेते हैं। यूनिवर्सिटी या कालेजके लिए इससे बेहतर आदर्श उदाहरण क्या हो सकता है। उन्होंने एक अलग ही आदर्श अपना लिया है। यानी अपनी-अपनी सफलताके लिए मुकाबला करना और जो भी राज्य-व्यवस्था हो, उसके आगे झुक जाना। हजारों छात्र अपना लक्ष्य पानेमें नाकाम रहते हैं। पंचतंत्रका भाग-३ या तीसरा चक्र, स्थाई दुश्मनीकी भावनाके बारेमें है। यह चक्र अलग-अलग किस्मकी सलाहें और साजिशोंसे पैदा हुए भयानक नतीजे दर्शाता है। कोई हैरानी नहीं कि तीसरे भागके बाद आखिरी दो भाग आते हैं, 'लाभका नुकसान' और 'बिना जांचे-परखे काम करना'। इन दोनों भागोंका मर्म दुखद है, जो नीतिपर अमल न करनेके अंजामसे चेताता है। चौथे भागमें, कहानी धोखेके परिणामोंके बारेमें है। यह एक लोकप्रिय कहानी है, जो एक बंदर और मगरमच्छके बीच दोस्तीके इर्द-गिर्द बुनी गयी है। उनके रिश्तेको मीठे फल वाले उस पेड़ने बढ़ावा दिया, जिसपर एक बंदर रहता है और जिसके नीचे मगरमच्छ हर दिन अपने दोस्तसे मिलने आता है। संकट तब पैदा होता है जब मगरमच्छ बंदरको धोखा देता है। लगभग उसकी जान ही चली गयी थी, लेकिन युक्ति लगाकर बच निकलता है। परन्तु इसके बादसे पुरानी दोस्ती निभानेसे साफ मना कर देता है। पंचतंत्र कोई पक्का हल नहीं बताता। इसके बजाय यह जिन्दगी और राजकाज करनेका एक ऐसा नजरिया बताता है जो परिस्थितिके हिसाबसे काम करे। कई दूसरी पुरानी सलाहोंके उलट, जो सख्त, उसूलों वाले व्यवहारके बारेमें बताती हैं, पंचतंत्र हमसे हर नयी स्थितिके हिसाबसे प्रतिक्रिया देनेके लिए कहता है। यह ऐसा नहीं है कि हम सहारेके बिना रह सकें, बल्कि इन शिक्षाप्रद कथाओंमें यह बात छिपी है कि नीति या सही रास्ता हमें लगातार खुदको सुधारनेकी गुंजाइशके साथ जीनेका राह दिखाता है। **-कृष्ण कुमार, वाया ईमेल।**

ट्रम्पके खिलाफ अमेरिकी मतदाता

अमेरिकी मतदाताओंका मानना है कि ट्रम्पने अमेरिकाकी आर्थिक स्थितिको खराब कर दिया है। जिससे आम लोगोंका जीना मुश्किल हो गया है। 'ब्लू सुनामी' ही कहा जायेगा इसे। यह आधुनिक इतिहासमें किसी मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपतिके खिलाफ सबसे बड़े जनादेशोंमें से एक रहा है।

❐ पुष्परंजन

अमेरिकी मतदाताओंके पास ट्रम्पकी निरंकुश सत्ताको नकारने, ईरानमें उनके अलोकप्रिय युद्ध, जीवनयापनकी भारी-भरकम लागतको कम करनेमें उनकी विफलता और पूरी दुनियामें आर्थिक अफरा-तफरी मचानेके खिलाफ अपना फैसला सुनानेका मौका था। अमेरिकी मतदाताओंने ट्रम्प समर्थकोंके 'एमएजीए' (मेक अमेरिका ग्रेट अगेन) के एकाधिकार को जबरदस्त 'ब्लू वेव' के जरिये समाप्त कर दिया। निचले सदन 'हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स' और ऊपरी सदन 'सीनेट' पर अब डेमोक्रेट्सका नियंत्रण दिखने लगा है। इससे डेमोक्रेट नेता हकीम जेफरीजके लिए इस सदनका पहला अश्वेत स्पीकर बननेका रास्ता साफ हो चुका है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प यकीनन इस कालखंडके सबसे बड़े इसरायल समर्थक राष्ट्रपति रहे हैं। इसलिए उनकी यह घोषणा कि संयुक्त राज्य अमेरिका इसरायलको चार बिलियन डालरकी वार्षिक सहायता देना बंद कर देगा, आश्चर्यजनक थी। इस घोषणाको भूकम्पीय थरथरीसे कम मत मानिये, जिसे तेल अवीवतक तीव्रतासे महसूस किया गया।



राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प इतनी आसानीसे पराजय स्वीकार करने वाले प्राणी नहीं हैं। उन्हें अपने 'वीटो' पर भरोसा है। ट्रम्पने कहा कि वे सदनमें डेमोक्रेट-समर्थित कानूनोंको रोकनेके लिए 'वीटो पावर' का इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने कहा 'यह राष्ट्रपतिके पास मौजूद सबसे मजबूत शक्तियोंमेंसे एक है। वे ऐसी चीजें भेजेंगे, जो बिल्कुल बेतुकी होंगी और मैं उनपर वीटो लगा दूंगा। कुछ महीनोंतक वीटो लगानेके बाद वे पूछेंगे कि इन कामोंको कैसे पूरा किया जाय और फिर हम मिलकर काम करेंगे।' लेकिन ट्रम्प यह भूल जाते हैं कि अमेरिकी संसदमें 'वीटो-प्रूफ बहुमत' भी होता है।

नेतन्याहूके कट्टर समर्थकोंका विचार भी बदलने लगा। वे मानने लगे कि ट्रम्पसे मिलकर उन्होंने देशको धोखा दिया है।

पिछले दिनोंके चुनावमें कोई स्पष्ट विजेता नहीं होने और नेतन्याहूके भविष्यपर अनिश्चितताके बाद इसरायल राजनीतिक अधरमें है। चार अरब डालरकी वार्षिक सैन्य सहायता बंद कर देनेकी घोषणाने दोनों देशोंके बीच संबंधोंके भविष्यपर गम्भीर सवाल खड़े कर दिये हैं। इससे ठीक एक सप्ताह पहले इसरायलमें चुनाव हुए थे, जिसमें नेतन्याहूने बार-बार इस बातपर जोर दिया था कि अमेरिकी राष्ट्रपतिके साथ उनके संबंधोंसे रणनीतिक अवसर मिलते हैं। ट्रम्पके ताजा बयानोंके अनुसार दोनों नेताओंके बीच इस सहायताको समाप्त करनेको लेकर महीनों पहले ही सहमति बन गयी थी, जबकि मौजूदा समझौता २०२८ तक लागू रहना था। ट्रम्पने दावा किया कि खुद नेतन्याहूने ही इस बदलावका प्रस्ताव दिया था। आखिर क्यों? क्या नेतन्याहूने मान लिया कि वे सरकार नहीं बना पायेंगे। बना भी ली तो मनमर्जी चला नहीं पायेंगे और जब इसरायलका नियंत्रण किन्हीं और हाथोंमें चला जाय तो ट्रम्पसे कहकर उसकी डोर क्यों न काट ली जाय। हालांकि नेतन्याहूने सार्वजनिक रूपसे यह वकालत की थी कि अगले एक दशकमें अमेरिकी सैन्य सहायताको धीरे-धीरे खत्म कर दिया जाना चाहिए। इसका असर गठबंधन बनानेकी बातचीतपर भी पड़ने लगा है। जो पार्टियां थोड़ा-बहुत नेतन्याहूके नेतृत्वको बर्दाश्त कर गठबंधन वाली सरकारमें शामिल होनेपर विचार कर रही थीं, अब उनके नेता बिदकने लगे हैं। उनके सामने एक बड़ा सवाल है कि भविष्यके सरकारी बजटपर पड़ने वाले वित्तीय बोझको कैसे संभाला जायगा।

ट्रम्पके कार्यकालके खत्म होनेसे पहले इसरायलके पास २८ महीनेका समय है, जिसमें वह ईरान, गाजा और लेबननमें चल रही प्रक्रियाओंको और अधिक मजबूत कर सकता है। मौजूदा समझौतेके तहत इसरायलको सालाना ३.८ अरब डालर मिलते हैं, जिसमें ३.३ अरब डालरकी सैन्य फंडिंग और ५०० मिलियन डालर संयुक्त मिसाइल-रक्षा कार्यक्रमोंके लिए शामिल हैं। यदि इस सहायताको जल्दबाजीमें वापस लिया जाता है तो रक्षा खरीद, बजट योजना और महत्वपूर्ण सुरक्षा क्षमताओंको बनाये रखनेको लेकर तुरन्त सवाल खड़े हो जायंगे। विदेश नीतिके ऐसे विश्लेषक, जो रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक, दोनों प्रशासनोंमें काम कर चुके हैं, मानते हैं कि इसरायलकी अर्थव्यवस्था अब इतनी मजबूत हो चुकी है कि उसे सैन्य उपकरण खरीदनेके लिए अमेरिकी मददकी जरूरत नहीं है। वैश्विक मामलोंके विश्लेषक और नयी किताब 'ब्रिंक' के लेखक ब्रेट मैकगर्क भी उनमेंसे एक हैं।

अमेरिकामें राजनीतिक हालातको भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। डेमोक्रेट्सने ऐतिहासिक जीत हासिल करते हुए हाउस और सीनेट, दोनोंपर अपना नियंत्रण बना लिया है। डेमोक्रेट्सने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पकी भारी अलोकप्रियताका फायदा उठाया और इतनी ताकत हासिल कर ली है कि वे उनके कार्यकालके आखिरी दो वर्षोंमें उनपर लगाम रख सकें। डोनाल्ड ट्रम्पका वर्तमान राष्ट्रपति कार्यकाल जनवरी, २०२९ में समाप्त होना तय है। लेकिन तबतक क्या वे शांत बैठेंगे। ट्रम्पने 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' को बताया कि वे नतीजोंको स्वीकार करेंगे। इससे फिलहाल उन सवालोंपर विराम लग गया है कि क्या वे इन नतीजोंको चुनौती देंगे।

ट्रम्प इतनी आसानीसे पराजय स्वीकार करने वाले प्राणी नहीं हैं। उन्हें अपने 'वीटो' पर भरोसा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पने जोर देकर कहा कि वे सदनमें डेमोक्रेट-समर्थित कानूनोंको रोकनेके लिए 'वीटो पावर' का इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने कहा, 'यह राष्ट्रपतिके पास मौजूद सबसे मजबूत शक्तियोंमेंसे एक है। वे ऐसी चीजें भेजेंगे, जो बिल्कुल बेतुकी होंगी और मैं उनपर वीटो लगा दूंगा। कुछ महीनोंतक वीटो लगानेके बाद वे पूछेंगे कि इन कामोंको कैसे पूरा किया जाय और फिर हम मिलकर काम करेंगे।' लेकिन ट्रम्प यह भूल जाते हैं कि अमेरिकी संसदमें 'वीटो-प्रूफ बहुमत' भी होता है। इसके लिए किसी एक राजनीतिक दल या गठबंधनके पास दोनों सदनोंमें यह संख्या बल होता है तो उसे 'वीटो-प्रूफ बहुमत' कहा जाता है।

सितंबर, २०२५ में ट्रम्पने एच-१बी वीजाकी फीस ८८ लाख रुपये कर दी थी, ताकि यह संदेश जाय कि वे अमेरिकी नागरिकोंके लिए नौकरियां सुरक्षित कर रहे हैं। ट्रम्पका 'अमेरिका फर्स्ट', 'टैरिफ बम' और ईरानकी तबाही भी अमेरिकी वोटरोंको नापसंद आयी। सितंबर, २०२६ के अंतमें हुई फ्लाईदुबई विमानकी खौफनाक घटनाको भी ट्रम्प और नेतन्याहूने अपने राजनीतिक उल्लू सीधे करनेके वास्ते इस्तेमाल किया। ये सारी तदबीरें उलटी पड़ गयीं। लगभग दो-तिहाई मतदाताओंका मानना है कि युद्धोन्मादी ट्रम्पने देशकी आर्थिक स्थितिको और खराब कर दिया है। इससे सबाल्टर्नका जीना मुश्किल हो गया। 'ज्यादातर अमेरिकी मतदाताओंका कहना है कि ट्रम्प देशके हितोंके बजाय अपने निजी हितोंको ज्यादा अहमियत देते हैं। अमेरिकी वोटरोंने पांच हजार डालरका चुग्गा भी नकार दिया। उन्होंने अपने वोटके महत्वको समझा। यह संदेश भारतीय मतदाताओंको भी स्वीकार करना चाहिए।'

किसानोंकी व्यावहारिक कठिनाईयां

देशकी अर्थव्यवस्थामें खेतीका महत्व केवल अनाज पैदा करनेतक सीमित नहीं है। किसानकी मेहनतसे ही लोगोंकी थालीतक भोजन पहुंचता है और बाजारसे लेकर उद्योगोंतक अनेक गतिविधियां चलती हैं।

❐ अमन सिंह गौर

खेती करने वाले लोगोंकी स्थिति ऐसी है कि पूरे साल खेतोंमें पसीना बहानेके बाद भी उनके सामने परिवार चलाने और अगली फसलकी तैयारी करनेकी चिन्ता बनी रहती है। कभी मौसम साथ नहीं देता तो कभी बाजारमें फसलका उचित भाव नहीं मिलता। खाद, बीज, डीजल और मजदूरीका खर्च लगातार बढ़ता है लेकिन किसानकी आमदनी उसी अनुपातमें नहीं बढ़ती। ऐसेमें खेतीको लाभका काम बनाने और किसानोंको उनकी मेहनतका उचित मूल्य दिलानेपर गम्भीरतासे विचार करनेकी जरूरत है। कृषिकी स्थितिका अन्दाजा इसी बातसे लगाया जा सकता है कि आर्थिक सर्वेक्षण २०२५-२६ के अनुसार देशके लगभग ४६.१ प्रतिशत कामगार कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रोंपर निर्भर हैं, जबकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थामें इस क्षेत्रका योगदान लगभग पांचवां हिस्सा है। वहीं वर्ष २०१९ के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालयके सर्वेक्षणके अनुसार देशमें लगभग ९.३० करोड़ कृषि परिवार थे, जो कुल ग्रामीण परिवारोंका करीब ५४ प्रतिशत हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि खेतीसे जुड़ी समस्या केवल खेतमें काम करने वाले व्यक्तितक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर करोड़ों परिवारोंकी आजीविकापर पड़ता है।

किसानके लिए फसल उगानेकी प्रक्रिया बीज बोनेसे बहुत पहले शुरू हो जाती है। उसे खेत तैयार करने, बीज खरीदने, खाद डालने, सिंचाई करने और मजदूरोंकी व्यवस्था करनेके लिए पहले ही पैसा लगाना पड़ता है। छोटे किसानोंके पास कई बार इतनी बचत भी नहीं होती कि वे अगली फसलका खर्च अपनी जेबसे उठा सकें। ऐसेमें उन्हें कर्ज लेना पड़ता है। फसल अच्छी हो जाय तो भी बाजारमें उचित कीमत मिलनेकी कोई गारंटी नहीं होती। यदि बारिश कम हो जाय या जरूरतसे ज्यादा हो जाय तो पूरी मेहनतपर पानी फिर जाता है। कई बार किसानको फसल बेचकर इतना भी नहीं मिलता कि वह अगली बुवाईके लिए जरूरी सामान खरीद सके। किसानोंकी सबसे बड़ी परेशानियोंमेंसे एक उपजका उचित मूल्य न मिलना है। न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित होनेके बावजूद सभी किसानोंको इसका लाभ नहीं मिल पाता। सरकारी खरीद केन्द्र हर गांवके पास नहीं होते और कई जगह खरीदकी प्रक्रिया भी आसान नहीं होती। छोटे किसानके लिए कुछ क्विंटल अनाज लेकर दूर मंडीतक जाना, वहां परिवहनका खर्च उठाना और कई बार कई दिनोंतक इंतजार करना आसान नहीं है। इसलिए वह गांवके आसपास ही अपनी उपज बेच देता है। कई बार मजबूरीमें उसे घोषित समर्थन मूल्यसे कम कीमतपर फसल बेचनी पड़ती है। किसानकी परेशानी केवल फसल उगानेतक नहीं, बल्कि उसे सही खरीदार और सही बाजारतक पहुंचानेकी भी है। दूसरी ओर शहरोंमें रहने वाले लोगोंको अनाज और सब्जियोंके दाम बढ़नेपर तुरन्त परेशानी महसूस होती है लेकिन उस उपजको तैयार करने वाले किसानको कई बार उसका उचित हिस्सा नहीं मिल पाता।

खेतीकी एक बड़ी समस्या सिंचाई और पानीकी उपलब्धता भी है। जिन किसानोंके पास नहर या ट्यूबवेलकी सुविधा है, उनकी स्थिति उन किसानोंसे अलग होती है जो पूरी तरह बारिशपर निर्भर रहते हैं। बिजलीकी अनियमित आपूर्ति, डीजलकी कीमत और सिंचाईके साधनोंका खर्च भी खेतीकी लागत बढ़ाता है। कई गांवोंमें किसान आज भी समयपर पानी मिलनेकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। ऐसेमें जल संरक्षण, तालाबोंकी मरम्मत, वर्षा जल संचयन और छोटी सिंचाई परियोजनाओंपर अधिक ध्यान देनेकी जरूरत है। हर किसानके लिए महंगी मशीन या निजी सिंचाई व्यवस्था खरीदना संभव नहीं है। इसलिए गांवोंमें सामूहिक सुविधाएं विकसित करना अधिक व्यावहारिक होगा। बदलते मौसमने किसानोंकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। कभी तैयार गेहूंकी फसलपर बेमौसम बारिश हो जाती है तो कभी ओलावृष्टिसे सरसों और दूसरी फसलें बर्बाद हो जाती हैं। सब्जियां उगाने वाले किसानोंकी परेशानी अलग है। टमाटर, आलू और प्याजकी कीमतोंमें अचानक गिरावट आनेपर कई बार उन्हें अपनी उपज मंडीतक ले जानेका खर्च भी निकालना मुश्किल हो जाता है। दूसरी ओर कुछ समय बाद यही सब्जियां बाजारमें महंगी बिकने लगती हैं। इसका लाभ किसानको न मिलकर अक्सर व्यापारीको मिलता है, क्योंकि उसके पास उपजको लम्बे समयतक सुरक्षित रखनेके साधन नहीं होते। गांवोंके आसपास शीतगृह और भंडारणकी सुविधाएं विकसित हों तो किसान जल्दबाजीमें फसल बेचनेके लिए मजबूर नहीं होगा।

सरकारकी ओरसे प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि और प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना जैसी योजनाएं किसानोंको आर्थिक सुरक्षा देनेके उद्देश्यसे चलायी जा रही हैं। दिसंबर २०२५ तक फसल बीमा योजनाके अंतर्गत लगभग १.९६ लाख करोड़ रुपयेके दावोंका भुगतान किया जा चुका था। इसके बावजूद कई किसानोंके सामने बीमाका लाभ पाने, नुकसानका सही आकलन कराने और समयपर मुआवजा प्राप्त करनेकी व्यावहारिक कठिनाइयां बनी रहती हैं। कहीं खेतमें नुकसान हुआ होता है लेकिन उसका आकलन किसानकी अपेक्षाके अनुसार नहीं होता। कहीं आवेदन और दस्तावेजोंकी प्रक्रिया समझना कठिन होता है। खेतीको बेहतर बनानेके लिए केवल अनाज उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। किसानोंको पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करणसे जोड़नेकी जरूरत है। गांवोंमें छोटे प्रसंस्करण केन्द्र खुलें तो किसान अपनी उपजसे अचार, आटा, तेल और दूसरे उत्पाद तैयार कर बेहतर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए प्रशिक्षण, आसान ऋण और बाजार उपलब्ध कराना भी जरूरी है।

किसान उत्पादक संघटनों और सहकारी समितियोंको मजबूत करनेसे छोटे किसान मिलकर मशीनें खरीद सकते हैं और अपनी उपजका बेहतर मूल्य प्राप्त करनेके लिए सामूहिक प्रयास कर सकते हैं। खेतीसे नयी पीढ़ीका भरोसा उठना भी चिन्ताका विषय है। किसान परिवारोंके युवा पढ़ाईके बाद खेती छोड़कर शहरोंमें नौकरी तलाश रहे हैं। वे खेतीसे दूर इसलिए नहीं जाना चाहते कि उन्हें अपने खेतसे लगाव नहीं है, बल्कि इसलिए कि उन्हें इसमें मेहनतके अनुपातमें सुरक्षित आमदनी दिखाई नहीं देती। यदि खेतीमें आधुनिक तकनीक, बेहतर बाजार, भंडारण और प्रसंस्करणकी सुविधाएं मिलें तो युवाओंके लिए भी इसमें नये अवसर बन सकते हैं। किसानोंकी स्थिति सुधारनेके लिए नीतियोंका लाभ कागजोंसे निकलकर खेततक पहुंचना चाहिए। फसलका उचित मूल्य, समयपर भुगतान, सस्ती कृषि सामग्री, भरोसेमंद सिंचाई और नुकसानकी स्थितिमें त्वरित सहायता खेतीकी बुनियादी जरूरतें हैं। यही कृषि व्यवस्थाकी सबसे बड़ी कसौटी होनी चाहिए। देशमें अनाजका उत्पादन बढ़ना महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी जरूरी है कि उसे पैदा करने वाले किसानका जीवन सुरक्षित और सम्मानजनक बने।



पर्व और त्योहार

❐ धर्मेश कुशवाहा

भारतीय परम्परामें प्रकृतिको संतुलन करनेके लिए विभिन्न पर्व और त्योहार मनानेकी समाजिक परम्परा हैं जिससे प्रकृतिका संतुलन बना रहे इस तरह दीपावलीका पर्व जोश और उमंगसे मनाया जाता है और दीपावलीके उत्सवमें प्रसन्नताके लिए मनुष्योंके द्वारा विभिन्न कार्य किये जाते हैं। दिवालीके पर्वपर मनुष्य अपने घर चार काम प्रमुखतासे करते हैं-पहला, घरका कूड़ा-कचरा साफ करना। दूसरा, सजाना और कोई नयी चीज खरीदना। तीसरा, खूब रोशनी करना तथा चौथा, लक्ष्मी जीका पूजन करना। काम चारों ही आवश्यक है परन्तु प्रणालीमें कुछ परिवर्तन करनेकी आवश्यकता है। दिवालीपर हम कूड़ा निकालते केवल बाहरका, अपने शरीरके अन्दरका कूड़ा-करकट नहीं निकालते हैं। कूड़ेके कई नाम है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, वैर, हिंसा, ईर्ष्या, द्रोह, घृणा और मत्सर आदि नाम है। इनके साथी तथा शिष्य बहुत है इन सबमें प्रधान तीन हैं काम, क्रोध और लोभ। इनको बाहर निकालकर जला देना चाहिए। इसके बाद घर सजानेकी बात रही। हमारी धारणा है कि साफ सजे हुए घरमें लक्ष्मी आती हैं, परन्तु लक्ष्मी जी सदा ठहरती नहीं है। लक्ष्मीजीको रोकनेके लिए उनके स्वामी नारायण देवको घरके मंदिरमें स्थापित करना। लक्ष्मीजी अपने स्वामीके चरणोंमें अचल होकर ही रहती हैं इसलिए अवश्य ही हमारे घरमें श्रीके रूपमें सदा निवास करेंगी। श्री नारायण देव क्षणभंगुर वस्तुओंसे वशमें नहीं होते उनके लिए तो वह नित्य नूतन रहने वाला पदार्थ चाहिए जो कभी पुराना न हो, विशुद्ध और अनन्य प्रेम इस प्रेमसे परमात्मा नारायण तुरन्त बसमें हो जाते हैं। नारायण देवता प्रकाशके अधिष्ठान है। सूर्य उन्हींसे प्रकाश पाते हैं, चंद्रमामें चांदनी उन्हींसे आती है। यह बात शास्त्रोंमें वर्णित हैं। जब समस्त जगतका आभास कराने वाले भगवान भास्कर सुधा दृष्टिसे संसारका पोषण करने वाले चंद्रदेव और जगतके आधार अग्नि देवता वहींके प्रकाशसे प्रकाशित होते हैं इन तीनोंका त्रिविध प्रकाश उन्हींके प्रकाश पुंजके एक शुद्ध परमाणु मात्र है प्रकाश अंबुधिकाका एक सूत्र है तब जहां वह स्वयं आ जाय वहांके प्रकाशका कोई ठिकाना नहीं रहता है उनका वह प्रकाश केवल यहीतक परिमित नहीं है। ब्रह्मा जगत उत्पादन बुद्धिमें उन्हींके प्रकाशकी झलक है शिवकी संहार मूर्तिमें भी उन्हींके प्रकाशका एक रूप है ज्ञानी मुनियोंके हृदय भी इस प्रकाशसे आलोकित है। जगतके समस्त कार्य मन-बुद्धिकी समस्त क्रियाएं इस नित्य प्रकाशके सहारे चल रही है। अत: काम, क्रोध, लोभरूपी कूड़ेको निकालकर मन साफ करना चाहिए फिर देवी संपत्तिकी सुन्दर सामग्रियोंसे उसे सजाना चाहिए तदनन्तर प्रेमरूपी नित्य नियम वस्तुका संग्रह करके और उसे श्री लक्ष्मीपति श्री नारायण देवको वशमें कर हृदयके गम्भीर अंत:स्थलमें विराजित करना चाहिए फिर देखिये महालक्ष्मी देवी और अखंड रूपसे चली आवेगी देवीका अलग आह्वान करनेकी आवश्यकता नहीं रह जायेगी।

पहाड़ोंमें उड़ानपर सुरक्षा समझौतेका उल्लंघन

❐ रजनीश कपूर

पिछले दिनों उत्तराखंडके चमोली जिलेमेंको बद्रीनाथसे देहरादूनके सहस्त्रधारा हैलीपैडके लिए उड़ान भरने वाला ट्रांस भारत एविएशनका एक हैलीकॉप्टर जोशीमठके पास चाई गांव-हाथी पर्वत क्षेत्रमें दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें पायलट कैप्टन समेत कर्नाटकके पांच यात्रियोंकी मौत हो गयी, जिनमें बेंगलुरु पुलिसके इंस्पैक्टर अरुण सालुंके भी शामिल थे। ऑरेंज अलर्ट और खराब मौसमके बीच उड़ान भरने वाला यह विमान संपर्क टूटनेके तुरन्त बाद पहाड़ीसे टकराया। यह हादसा चारधाम क्षेत्रमें हो रही हैलीकॉप्टर दुर्घटनाओंकी श्रृंखलाका हिस्सा है और पहाड़ी उड़ानोंकी मूलभूत कमजोरियोंको उजागर करता है। पहाड़ोंमें हैलीकॉप्टर उड़ानें स्वाभाविक रूपसे जोखिमभरी होती हैं। चारधाम यात्रामें हैलीकॉप्टर सेवाएं लोकप्रिय हो गयी हैं, क्योंकि वे तीर्थयात्रियोंको कठिन पैदल यात्रासे बचाती हैं। लेकिन यह सुविधा सुरक्षाके मूल्यपर आ रही है। एयरक्राफ्ट एक्सीडैंट इन्वैस्टिगेशन ब्यूरोके आंकड़ोंके अनुसार २०१५ से २०२५ के बीच चारधाम सैक्टरमें आठ दुर्घटनाएं और एक गम्भीर घट